P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-1* September- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

राजस्थानी लघु चित्रों में 'वेदव्यास' का चित्रण

जगदीश प्रसाद मीणा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
चित्रकला विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर

सारांश

भारतीय कला के इतिहास में राजस्थानी लघु चित्रों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। भारत एक धर्म प्रधान देश है, जहाँ विभिन्न धर्मों के लोग एक साथ भाईचारे के रूप में रहते हैं। भारत में विभिन्न धर्मों के ग्रन्थों की रचना हुई और चित्रकार ने उन धार्मिक ग्रन्थों की कथावस्तु को अपनी कल्पना से रेखा, रूप व रंग के आधार पर आकारों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति प्रस्तुत कर दी। इन्हीं धार्मिक ग्रन्थों में 'महाभारत' एक ऐसा ग्रन्थ है, जिसकी वेदव्यास जी ने रचना की, जिसे किसी विशेष परिचय की आवश्यकता नहीं है। 'महाभारत' के नाम से ही उनका स्वयं का परिचय है। 'महाभारत' को संसार का सबसे बड़ा महाकाव्य कहा जाता है और इसे भारतवर्ष में 'पंचम–वेद' के रूप में भी पहचाना जाता है। राजस्थानी लघु चित्र शैलियों में चित्रित 'वेदव्यास' का चित्रांकन करना तो चित्रकार के लिए गौरव का काम था, जो राजस्थानी शासकों व उनके चित्रकारों की तूलिका के द्वारा अछूता न रह सका।

मुख्य शब्दः राजस्थानी, वेदव्यास, चित्रकला, साहित्य, महाभारत, त्रिकालदर्शी, कृष्ण द्वैपायन आदी।

प्रस्तावना

राजस्थान में लघु चित्रों की परम्परा का उदय 9वीं शती में बने ताड़पत्रों एवं लकड़ी की पटलियों पर बने चित्रों से हुआ, जिनकी मूल कथावस्तु जैन धर्म के आख्यान थे। जिस प्रकार पूर्वी भारत (बंगाल, बिहार) में बौद्ध विषयों पर आधारित चित्र बन रहे थे, उसी प्रकार उसी समय, लगभग उसी तकनीक से पश्चिमी भारत (गुजरात, राजस्थान में) जैन चित्रों की रचना हो रही थी। इसी समय 'चौरपंचाशिका शैली' का उदय हुआ। इसी तरह इन्हीं प्रारंभिक चित्रित पाण्डुलिपियों ने कालान्तर में एक स्वतन्त्र 'राजपूत शैली' को जन्म दिया, जो 17वीं–18वीं शती में अपने सर्वोच्च शिखर पर थी।[1]

16वीं शती की चित्रकला और साहित्य का वैष्णव–सम्प्रदाय पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस आन्दोलन के कारण राजस्थानी कला में महाभारत, रामायण, रसिकप्रिया, बारहमासा इत्यादि विषयों से सम्बन्धित चित्र बनने लगे, जिनमें अत्यधिक नवीन, सुमधुर कल्पना, भावुकता और रहस्यात्मकता आयी। समस्त हिन्दू समाज और राजस्थान में इस सामाजिक जागरण तथा अकबर की उदार नीति के कारण कलाओं में एक नवीन सूझ–बूझ और रसप्रवाह दिखाई देने लगता है।[2]विभिन्न राजस्थानी रियासतों में चित्रकला ने राजपूत आँचलों की निजी विशेषताओं को ग्रहण किया। इस प्रकार की प्रवृत्तियों ने राजस्थानी कला के विकास तथा प्रगति को नवीन मोड़ दिया है। राजस्थानी लघु चित्र शैलियों में चित्रित 'वेदव्यास' अथवा 'महाभारत' विषयक चित्रित ग्रन्थ बड़ी संख्या में भारत तथा विदेशों के अनेक कला सग्रहालयों में सुरक्षित हैं।

भगवान वेदव्यास एक अलौकिक शक्ति सम्पन्न महापुरुष थे। इनके पिता का नाम महर्षि पराशर और माता का नाम सत्यवती था। इनका जन्म एक द्वीप के अन्दर हुआ था और इनका वर्ण श्याम था, अतः इनका नाम 'कृष्ण द्वैपायन' (चित्र–01) पडा। वेदों का विस्तार करने के कारण ये 'वेदव्यास' तथा बदरीवन में निवास करने के कारण 'बादरायण' भी कहे जाते है।[3]

हिन्दू धर्मशास्त्रों के अनुसार महर्षि व्यास त्रिकालदर्शी थे तथा उन्होंने दिव्य दृष्टि से देखकर जान लिया कि कलयुग में धर्म क्षीण हो जाऐगा। धर्म के क्षीण होने के कारण मनुष्य नास्तिक, कर्त्तव्यहीन और अल्पायु हो जावेंगे। एक विशाल वेद का सांगोपांग अध्ययन उनके समर्थ से बाहर हो जायेगा इसलिये महर्षि व्यास ने वेद का चार भागों में विभाजन कर दिया, जिससे कि कम बुद्धि एवं कम स्मरण शक्ति रखने वाले भी वेदों का अध्ययन कर सकें। व्यास जी ने उनका नाम रखा– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। वेदों का विभाजन

करने के कारण ही व्यास जी वेद–व्यास के नाम से विख्यात हुये। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद को क्रमशः अपने शिष्य पैल, जैमिनी, वैशम्पायन और सुमन्तुमुनि को पढ़ाया। वेद में निहित ज्ञान के अत्यन्त गूढ तथा शुष्क होने के कारण वेदव्यास ने पाँचवे वेद के रूप में पुराणों की रचना की जिनमें वेद के ज्ञान को रोचक कथाओं के रूप में बताया गया है। पुराणों को उन्होंने अपने शिष्य रोमहर्षण को पढाया। व्यास जी के शिष्यों ने अपनी–अपनी बुद्धि के अनुसार उन वेदों की अनेक शाखाएँ और उपशाखाएँ बना दी। व्यास जी ने महाभारत की रचना (चित्र–02) की।[4] जिसको आज विश्व में सबसे बडा 'महाकाव्य' भी माना जाता है।

साहित्यावलोकन

16 वीं शताब्दी की चित्रकला और साहित्य पर वैष्णव–सम्प्रदाय का गहरा प्रभाव पडा। इस आन्दोलन के कारण राजस्थानी कला में काव्य (साहित्य) की अत्यधिक नवीन, सुमधुर कल्पना, भावुकता और रहस्यात्मकता आई। समस्त हिन्दू समाज और राजस्थान में इस सामाजिक जागरण तथा अकबर की उदार नीति के कारण कलाओं में एक नवीन सूझ–बूझ और रसप्रवाह दिखाई पडने लगा[5]।

साहित्य के विषय की दृष्टि से उनमे विविधता है। 'रामायण' और महाभारत के धार्मिक तथा पौराणिक विषयों के चित्रांकन के अतिरिक्त 'सूर' की कविताओं का भक्तिभाव, बाल्याभाव एवं युवाभाव, मतिराम, केशव, देव, बिहारी और पद्माकर आदि हिन्दी के रीतिकालीन कवियों द्वारा वर्णित श्रंगार की विभिन्न स्थितियों का चित्रण मीरा के आत्मसमर्पण का भाव सभी का आदिकला रूप राजपूत चित्रों में दर्शित किया गया है। राजस्थानी शैली में 'राग–रागिनी, ऋतुवर्णन, बारहमासा आदि साहित्यों का चित्रकला में चित्रण बहुतायत से मिलता है[6]।

महाभारत हिन्दुओं का एक प्रमुख काव्य ग्रन्थ है, जो स्मृति वर्ग में आता है। कभी–कभी केवल ''भारत'' कहा जाने वाला यह काव्य ग्रन्थ भारत का एक धार्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक और दार्शनिक ग्रन्थ है। विश्व का सबसे लम्बा यह साहित्यिक ग्रन्थ और महाकाव्य, हिन्दू धर्म के मुख्यतम ग्रन्थों में से एक है। इस ग्रन्थ को हिन्दू धर्म में 'पंचम–वेद' माना जाता है। यद्यपि इसे साहित्य की सबसे अनुपम कृतियों में से एक माना जाता है, किन्तु आज भी यह ग्रन्थ प्रत्येक भारतीय के लिए अनुकरणीय स्त्रोत है। यह कृति प्राचीन भारत के इतिहास की एक गाथा है। इसी में हिन्दू धर्म की पवित्रतम ग्रन्थ ''भगवद्गीता'' सन्निहित है। पूरे महाभारत में लगभग एक लाख श्लोक हैं। जो यूनानी काव्यों इलियड़ और ओडिसी से परिमाण में दस गुणा अधिक हैं।

पौराणिक संदर्भों एवं महाभारत के अनुसार इस काव्य का रचनाकार 'वेदव्यास जी' को माना जाता है। इस काव्य के रचयिता वेदव्यास जी ने अपने इस अनुपम काव्य में वेदों, वेदांगों और उपनिषदों के गुह्यतम रहस्यों का निरूपण किया है। इसके अतिरिक्त इस काल में न्याय, शिक्षा, चिकित्सा, ज्योतिष, युद्धनीति, योगशास्त्र, अर्थशास्त्र, वास्तुशास्त्र, कामशास्त्र, खगोलविद्या तथा धर्मशास्त्रों का भी विस्तार से वर्णन किया गया है।[7]

वेदव्यास के जन्म की कथा

भगवान वेदव्यास का जन्म सप्तर्षि–संवत् 817 या 3347 ई.पू. में हुआ था।[8] पौराणिक कथाओं के अनुसार प्राचीन काल में सुधन्वा नाम के एक राजा थे। वे एक दिन आखेट के लिये वन गये। उनके जाने के बाद ही उनकी पत्नी रजस्वला हो गई। उसने इस समाचार को अपने शिकारी पक्षी के माध्यम से राजा के पास भिजवाया। समाचार पाकर महाराज सुधन्वा ने एक दोने में अपना वीर्य निकाल कर पक्षी को दे दिया। पक्षी उस दोने को राजा की पत्नी के पास पहुँचाने आकाश में उड चला। मार्ग में उस शिकारी पक्षी को एक दूसरे शिकारी पक्षी मिल गया। दोनों पक्षियों में युद्ध होने लगा। युद्ध के दौरान वह दोना पक्षी के पंजे से छूट कर यमुना में जा गिरा और यमुना में ब्रह्मा के शाप से मछली बनी एक अप्सरा रहती थी। मछली रूपी अप्सरा दोने में बहते हुए वीर्य को निगल गई तथा उसके प्रभाव से वह गर्भवती हो गई। गर्भ पूर्ण होने पर एक निषाद ने उस मछली को अपने जाल में फंसा लिया। निषाद ने जब मछली को चीरा तो उसके पेट से एक बालक तथा एक बालिका निकली। निषाद उन शिशुओं को लेकर महाराज सुधन्वा के पास गया। महाराज सुधन्वा के पुत्र न होने के कारण उन्होंने बालक को अपने पास रख लिया, जिसका नामकरण मत्स्यराज हुआ। बालिका निषाद के पास ही रह गई और उसका नाम मत्स्यगंधा रखा गया, क्योंकि उसके अंगों से मछली की गंध निकलती थी। उस कन्या को सत्यवती के नाम से भी जाना जाता है। बडी होने पर वह नाव खेने का कार्य करने लगी। एक बार पाराशर मुनि को उसकी नाव पर बैठ कर यमुना पार करना पडा। पाराशर मुनि सत्यवती के रूप सौन्दर्य पर आसक्त हो गये और बोले–''देवीः मै तुम्हारें साथ सहवास करना चाहता हूँ।'' सत्यवती ने कहा– ''मुनिवर! आप ब्रह्मज्ञानी हैं और मै निषाद कन्या। हमारा सहवास सम्भव नहीं है।'' तब पाराशर मुनि बोले– ''बालिके तुम चिन्ता मत करो। प्रसूति होने पर भी तुम कुमारी ही रहोगी।'' इतना कहकर उन्होंने अपने योगबल से चारों और घने कोहरे का जाल रच दिया और सत्यवती के साथ सम्भोग किया। तत्पश्चात् उसे आशीर्वाद देते हुये कहा, तुम्हारे शरीर से जो मछली की गंध निकलती है, वह सुगन्ध में परिवर्तित हो जायेगी।'' समय आने पर सत्यवती गर्भ से वेद वेदागों से पारगंत एक पुत्र हुआ। जन्म होते ही वह बालक बडा हो गया और अपनी माता से बोला– माता! तू जब भी कभी मुझे विपत्ति में याद करेगी, तो मै उपस्थित हो जाऊंगा। इतना कहकर वह श्याम वर्ण बालक द्वैपायन द्वीप पर तपस्या करने चला गया। द्वैपायान द्वीप में तपस्या करने तथा उनके शरीर का रंग काला होने के कारण उन्हे, 'कृष्ण द्वैपायन' कहा जाने लगा।[9]

वेदव्यास जी की मृत्यु अप्रासंगिक मानी जाती है, फिर भी जनमेजय के 'सर्प–सत्र' यज्ञ का 3038 ई.पू. में वेदव्यास जी की देखरेख में शुरू किया और 3026 ई.पू. तक सर्वसत्र चलता रहा। इस गणना से 3347–320–3027 ई.पू. को ध्यान में रखते हुए कृष्ण

द्वैपायन व्यास 320 वर्ष जीवन में सक्रिय रहे। द्रौणाचार्य के पश्चात् सर्वाधिक वयोवृद्ध व्यक्ति वेदव्यास जी ही थे।[10]

महर्षि वेदव्यास त्रिकालदर्शी (चित्र–03) थे। जब पाण्डव एकचक्रा नगरी में निवास कर रहे थे, तब जी वेदव्यास उनसे मिलने आये। उन्होंने पाण्डवों को द्रौपदी के पूर्व जन्म का वृतान्त सुनाकर कहा कि –''यह कन्या विधाता के द्वारा तुम्हीं लोगों के लिये बनायी गयी है, अतः तुम लोगों को द्रौपदी–स्वयंवर में सम्मिलित होने के लिये पाञ्चानगरी की ओर जाना चाहिये। ''महाराज द्रुपद को भी वेदव्यास जी ने द्रौपदी के पूर्व जन्म की बात बताकर उन्हें द्रौपदी का पाँचों पाण्डवों से विवाह करने की प्रेरणा दी थी।[11]

महाराज युधिष्ठिर ने जब इन्द्रप्रस्थ में राजसूय यज्ञ किया, उस समय भी वेदव्यास जी यज्ञ में सम्मिलित होने के लिये अपनी शिष्यमण्डल के साथ पधारे थे। यज्ञ समाप्त होने पर व्यास जी विदा होने के लिए युधिष्ठिर के पास आये और बातों ही बातों में उन्होंने युधिष्ठिर को बतलाया कि आज से तेरह वर्ष बाद क्षत्रियों का महासंहार होगा, जिससे दुर्योधन के अपराध से उसकी मृत्यु का कारण तुम्हीं ही होंगे। उसके बाद पाण्डवों को वनवास काल मिलने पर उन्हें वन में मार डालने का विचार, मामा शकुनि, दुर्योधन व दुःशासन ने बनाया, जिसका वेदव्यास जी को अपनी दिव्य दृष्टि से मालूम चल गया था। इसके बाद व्यास जी धृतराष्ट्र के पास जाकर उन्हें समझाया (चित्र–04) कि – ''तुमने जुएं में पाण्डवों को हराकर वन में भेज कर अच्छा नहीं किया, आपके लाड़ला बेटा दुर्योधन, शकुनि पाण्डवों को जंगल में मारने का विचार बना रहे है। अगर इन्होंने ऐसा कृत्य किया तो अपने प्राणों से हाथ धो बैठेगा। इसलिए अपने बेटे को रोको और समझाओ।''[12]

भगवान व्यास जी सञ्जय को दिव्य–दृष्टि प्रदान की, जिससे सञ्जय ने युद्ध–दर्शन के साथ उनमें भगवान के विश्वरूप एवं दिव्य चतुर्भुजरूप के दर्शन की भी योग्यता आ गयी। उन्होंने कुरूक्षेत्र की युद्धभूमि में भगवान श्रीकृष्ण के मुखारविन्द से निःसृत श्रीमद्भगदगीता का श्रवण किया, जिसे अर्जुन के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं सुन पाया।[13]

एक बार जब धृतराष्ट्र वन में रहते थे जब महाराज युधिष्ठिर अपने परिवार सहित उनसे मिलने गये। व्यास जी भी वहाँ आये। धृतराष्ट्र ने उनसे जानना चाहा कि महाभारत के युद्ध में मारे गये वीरों की क्या गति हुई? उन्होंने व्यास जी से एक बार अपने मरे हुए सम्बन्धियों का दर्शन कराने की प्रार्थना की। धृतराष्ट्र के प्रार्थना करने पर व्यास जी ने अपनी अलौकिक शक्ति के प्रभाव से गंगा जी में खडे होकर युद्ध में मरे हुए वीरों का आह्वान किया और युधिष्ठिर, धृतराष्ट्र, कुन्ती के सभी सम्बन्धियों का दर्शन कराया। वैशम्पायन के मुख से इस अद्भुत वृत्तान्त को सुनकर राजा जनमेजय के मन में अपने पिता परीक्षित का दर्शन करने की लालसा पैदा हुई। व्यास जी वहाँ उपस्थित थे। उन्होंने महाराज परीक्षित को वहाँ बुला दिया। जनमेजय यज्ञान्त स्नान के समय अपने पिता को भी स्नान कराया। तदनन्तर महाराज परीक्षित वहाँ से चले गए। अलौकिक शक्ति से सम्पन्न तथा महाभारत के रचयिता महर्षि व्यास के चरणों में शत–शत नमन है।[14]

इस प्रकार भारतीय वाङ्मय एवं हिन्दू–संस्कृति पर व्यास जी का बहुत बडा ऋण है। श्रुति–स्मृति–पुराणोक्त सनातन धर्म के व्यास जी एक प्रधान व्याख्याता कहे जा सकते है। इनके उपकार से हिन्दू जाति कदापि उऋण नहीं हो सकती । जब तक हिन्दू जाति और भारतीय संस्कृति जीवित है, तब तक इतिहास में व्यास जी का नाम अमर रहेगा।[15]

अध्ययन का उद्देश्य

राजस्थानी कला के इतिहास में महाभारत विषयक चित्रों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। राजस्थानी लघु चित्रों में विभिन्न धर्मों के ग्रन्थों की रचना हुई और चित्रकार ने उन धार्मिक ग्रन्थों की कथावस्तु को अपनी कल्पना से रेखा, रूप व रंग के आधार पर आकारों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति प्रस्तुत कर दी। इन्हीं धार्मिक ग्रन्थों में 'महाभारत' एक ऐसा ग्रन्थ है, जिसे किसी विशेष परिचय की आवश्यकता नहीं है। महाभारत राजस्थानी साहित्य का ही नहीं वरन् विश्व साहित्य का ऐसा अद्भुत व रोचक ग्रन्थ है, जिसके आकार की विशालता, विषयों की व्यापकता, लोकप्रियता आदि की दृष्टि से यह ग्रन्थ विश्व साहित्य में अद्वितीय है। ऐसे ग्रन्थ के रचयिता 'वेदव्यास' का चित्रांकन करना तो चित्रकार के लिए गौरव का काम था, जो राजस्थानी शैली के अलावा मुगल और पहाड़ी शैलियों के चित्रकारों की तूलिका के द्वारा अछूता न रह सका।

जयपुर शैली में निर्मित 1860 ई. का चित्र–01 ''वेद व्यास जी'' नामक है, जो ''विष्णु अवतार श्रृंखला'' से लिया गया है। यह चित्र महाभारत के रचयिता वेदव्यास का है, जो महाभारत के 'आदि पर्व' से संबन्धित है। वर्तमान में यह चित्र पीटर ब्लोह्म के निजी संग्रह में संग्रहीत है।[16] इस चित्र में वेदव्यास जी को नीले रंग में चौकी के ऊपर बैठे हुए चित्रित किया है। चेहरे पर सफेद दाढ़ियाँ व बाल, दायें हाथ की अंगुली से ज्ञान देने की मुद्रा में, गले में मोतियाँ और पुष्पों की माला और कन्धे पर से सफेद पादर्शक दुपट्टा, पीला–केसरिया रंग की धोती, नीला आकाश, हरे–भरे पेडों का ऊपरी हिस्सा, पीछे दायीं तरफ गहरा भूरा रंग में चित्रित भवन की दिवार व भवन की ऊपरी छत को सफेद रंग के पुष्पों से सुसज्जित छत और जालीयाँदार दीवार इत्यादि सुन्दर रूप में चित्रित है। यह चित्र बहुत ही सुन्दर और आकर्षक है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-1* September- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

चित्र – 01 ''वेदव्यासजी'', विष्णु–अवतार श्रंखला, आदिपर्व, जयपूर शैली, 1860 ई,

स्रोत –
http://www.indianminiaturepainting.co.uk/jaipur_avatara_vyasa_000382.html

मेवाड़ शैली का चित्र–02 ''गणेश जी वेदव्यास के बताए अनुसार 'महाभारत' को लिखते हुए'' है, जिसको राणा राजसिंह (1652–80 ई.) के समय में 1675–80 ई. के लगभग चित्रित किया गया था। इस चित्र में वेदव्यास जी और गणेश जी का चित्रांकन किया गया है। इस चित्र के ऊपर की तरफ दो लाइनों में दोहा–बन्ध पाण्डुलिपि लिखी गई है। चित्र के मध्य में हरा रंग का मैदान बनाया है, आकाश का रंग आसमानी है, आकाश और धरातल को सफेद रंग की लम्बी पट्टी से विभाजित कर रखा है। चित्र के बायें तरफ वेदव्यास जी को चटाई पर बैठाकर दायीं तरफ आकाश की ओर देखते हुए चित्रित किया है। चित्र के दायीं तरफ ऊपर की ओर ब्रह्मा जी का चित्रांकन किया है। कथावस्तु यह है कि वेदव्यास जी महाभारत लिखना चाहते हैं, तो ब्रह्माजी इस शुभ काम के लिए गणेश जी को उपयुक्त व्यक्ति मानते हैं और उन्हीं के पास भेजते हैं। चित्र में दायीं तरफ विशालस्वरूप में गणेश जी के सामने वेदव्यास जी को हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हुए चित्रित किया है। वेदव्यास जी के शरीर में नीला रंग, केसरिया रंग की धोती व हरे रंग का कन्धे पर दुपट्टा चित्रित किया है। गणेश जी का चेहरा गुलाबी रंग में चित्रित किया है, जिसके चार हाथ, पैर व शरीर में हल्का भूरा रंग भरा गया है। पीले रंग की धोती, सिर पर मुकुट व मुकुट के ऊपर कमलपुष्प व सिर के पीछे आभामण्डल चित्रित किया है। चित्र के नीचे बायीं तरफ एक चटाई पर वेदव्यास जी व गणेश जी 'महाभारत' की रचना करते हुए चित्रित किया गया है। वेदव्यास जी महाभारत की कथा को अपने मुख से बोल रहे हैं और गणेश जी उसको लिखते जा रहे हैं। इस चित्र में दायीं तरफ नीचे की ओर एक भवन भी चित्रित किया गया है, जिसको सफेद, गुलाबी, हरा व श्याम रंग से चित्रित किया गया है। इस चित्र को चित्रकार ने बहुत ही खूबसूरती के साथ संयोजित करके चित्रित किया है। इस एक ही चित्र में कथा–वस्तु के तीन दृश्यों को चित्रकार ने एक साथ चित्र भूमि में चित्रित करके अन्तराल–विभाजन का बहुत अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया है। वर्तमान में यह चित्र बहुत ही कटी–फटी व धुंधली स्थिति में देखने को मिलता है।[17]

चित्र – 2 ''गणेश जी वेदव्यास के बताए अनुसार 'महाभारत' की रचना करते हुए'', आदि पर्व, उदयपुर शैली, 1675–1680 ई.

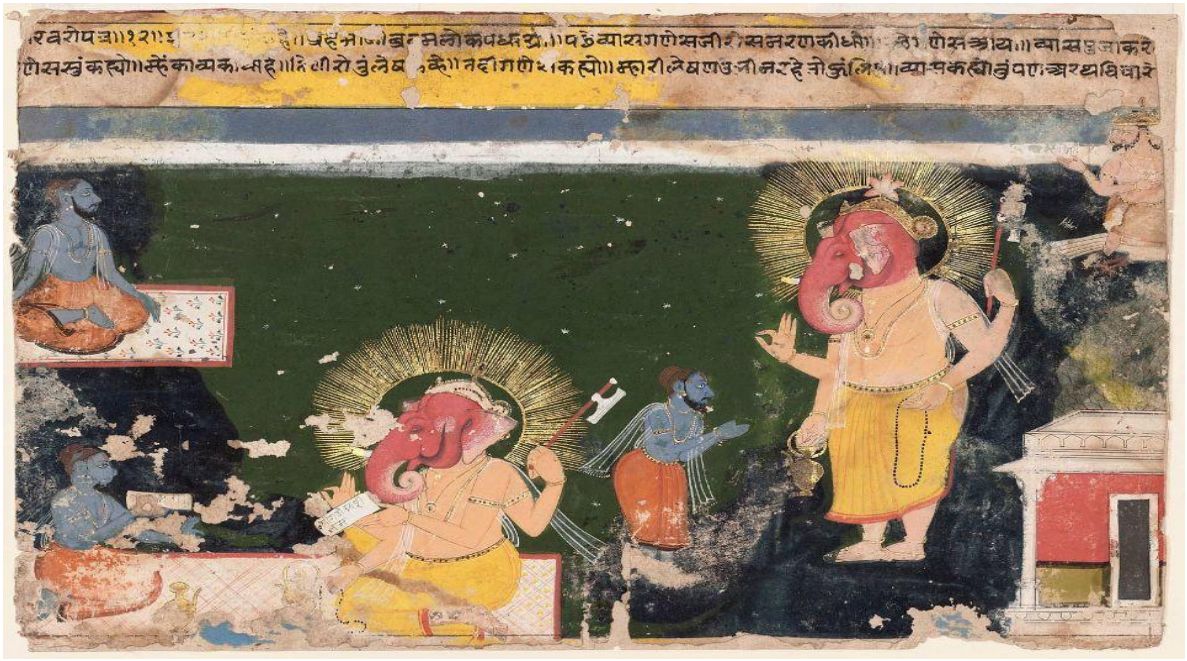

स्रोत – http://www.mfa.org/collections/object/ganesa-writting-the-mahabharat-dictated-by-vyasa-149627

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-1* September- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

चित्र – 03 ''युधिष्ठिर पाण्डव भाईयों से चर्चा करते हुए'', वन पर्व, उदयपुर शैली, 1680–1698 ई.

संग्रह – राजकीय संग्रहालय, उदयपुर।

मेवाड़ शैली के चित्र–03 ''युधिष्ठिर पाण्डव भाईयों से चर्चा करते हुए'' में एक सफेद गाय का चित्रांकन प्रतीकात्मक रूप में किया गया है। इस चित्र में कथावस्तु के दो दृश्य है– पहला दृश्य बायें तरफ है जिसमें गद्दी पर बैठे हुए युधिष्ठिर को अपने पाण्डवों भाईयों से चर्चा करते हुए दिखाया है, लेकिन दूसरे दृश्य में दायी तरफ जंगल में नीचे बैठकर युधिष्ठिर अपने भाईयों से चर्चा कर रहे हैं। लेकिन चित्र के नीचे बायी तरफ 'वेदव्यास जी'(ऋषि), एक सफेद गाय, एक राजदरबारी व एक सेवक (प्रजा) सभी दायी तरफ जंगल में चर्चा करते हुए पाण्डवों की ओर मुंह करके देख रहे हैं। यहाँ सफेद गाय सत्य का प्रतीक है और दायी ओर दो पेड़ चित्रित हैं, जिसमें बायीं तरफ वाला पेड़ हरी पत्ती वाला है, जबकि दायी तरफ वाला हरी पत्तियों से ज्यादा लाल पत्तियों में चित्रित है। हरा वाला पेड़ पाण्डवों के महल में बैठे हुए दृश्य की शान्त मनोचित को दर्शाता है लेकिन दायी तरफ वाला पेड़ लाल–पत्तियों से ज्यादा भरा है, क्योंकि जंगल में बैठे पाण्डव द्रौपदी के अपमान व कौरवों के अन्याय से बहुत ज्यादा क्रोधित है। यह पेड़ पाण्डवों के आन्तरिक मन में क्रोध की धधकती ज्वाला को दर्शा रहा है, जिसको 'वेदव्यास जी' दिव्य दृष्टि से देख रहे है।[18]

चित्र – 04 ''धृतराष्ट्र से वेदव्यास व संजय युद्ध चर्चा करते हुए'', भीष्म पर्व, उदयपुर शैली, 1680–1698 ई.,

संग्रह – राजकीय संग्रहालय, उदयपुर।

उदयपुर शैली के अगला चित्र–04 भी महाभारत के भीष्म पर्व से सम्बन्धित है, जिसमें ''धृतराष्ट्र से वेदव्यास व संजय युद्ध की चर्चा करते हुए'' चित्रित है। यह चित्र भी राणा जयसिंह के शासनकाल में 1680–98 ई. के बीच चित्रकार 'अलाबक्श' के द्वारा चित्रित किया गया था, जो वर्तमान में राजकीय संग्रहालय, उदयपुर में संग्रहीत है।[16] इसमें कुरुक्षेत्र के मैदान में चल रहे युद्ध की मार–काट को चित्रित किया गया है। चित्र में बायें ऊपर की तरफ एक हस्तिनापुर का भवन दिखाया है जिसमें गद्दी पर धृतराष्ट्र बैठे हुए हैं, सामने हाथ जोड़कर वेदव्यास जी बैठे हुए हैं और धृतराष्ट्र के पीछे संजय खड़ा हुआ है। इस चित्र में वेदव्यास जी धृतराष्ट्र से उपरोक्त लिखी हुई पाण्डुलिपि के अनुसार युद्ध चर्चा करते हुए चित्रित किया है। कुरुक्षेत्र के युद्ध धरातल को काले सपाट रंग से चित्रित किया है। चित्र में ऊपर लाल रंग वाले भू–भाग में पाँच हिरणों को दौड़ते हुए चित्रित किया गया, जिनके पीछे एक बाघ दौड़ रहा है। इस दृश्य में हिरणों को कौरवों व बाघ को पाण्डव के रूप में चित्रित किया है। यह चित्र बहुत ही सुन्दर है।

निष्कर्ष

इस प्रकार राजस्थान में आवश्यक विषयों के साथ–साथ महाभारत के चित्रों का भी चित्रांकन मिलता है। अतः 'राजस्थानी लघु चित्रों में वेदव्यास का चित्रण' विषय का राजस्थान की सभी शैलियों में कही ज्यादा और कहीं कम, लेकिन सभी शैलियों में महाभारत के रचयिता वेदव्यास की कथावस्तु का चित्रांकन मिलता है। राजस्थान की सभी शैलियाँ अपनी–अपनी विशेषताओं के आधार पर अपनी मौलिकता को बनाये रखती है। यह शोध लेख राजस्थानी कला इतिहास में वेदव्यास सम्बन्धी चित्रों को बहुत अधिक पहचान दिलायेगा। इस शोध लेख में मैंने उन सभी पहलुओं को छूने की कोशिश की है, जिनसे वेदव्यास विषयक चित्रों की सारगर्भित जानकारी उपलब्ध हो सके। यह शोध लेख कला प्रेमी, पाठकों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों व राजस्थानी कला इतिहास मे अपना बहुत बड़ा योगदान करेगा।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *श्रोत्रिय, शुकदेव – भारतीय चित्रकला, शोध–संचय, चित्रायन प्रकाशन, मुजफ्फरनगर, 1997, पृ. 44*
2. *गैरोला, वाचस्पति – भारतीय चित्रकला, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, 1990, पृ. 155*
3. *गीताप्रेस – महाभारत के प्रमुख पात्र, गीताप्रेस, गोरखपुर,, वि.सं. 2070, पृ. 5*
4. *वेदव्यास – http//hi.wikipedia.org/s/2f4*
5. *डॉ. अविनाश बहादुर वर्मा – भारतीय चित्रकला का इतिहास, प्रकाश बुक डिपो, बरेली–2000, पृ. – 175*
6. *वाचस्पति गैरोला – भारतीय चित्रकला, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, 1990, पृ. – 166*
7. *https://hi.wikipedia.org/s/2yn*
8. *बाली, चन्द्रकान्त – भारतयुद्ध–कालमीमांसा, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, 1993, पृ. 187*
9. *वेदव्यास – http//hi.wikipedia.org/s/2f4*
10. *बाली, चन्द्रकान्त – भारतयुद्ध–कालमीमांसा, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, 1993, पृ. 147*
11. *गीताप्रेस – महाभारत के प्रमुख पात्र, गीताप्रेस, गोरखपुर,, वि.सं. 2070, पृ. 5*
12. *गीताप्रेस – महाभारत के कुछ आदर्श पात्र, गीताप्रेस, गोरखपुर, वि.सं. 2070, पृ. 102–103*
13. *शास्त्री, यशपाल – संशोधित महाभारत, प्रथम भाग (आरम्भ से भीष्म पर्व तक), सूर्य भारती प्रकाशन, दिल्ली, 2003, पृ. 54*
14. *गोयन्दका, जयदयाल – संक्षिप्त महाभारत, प्रथम खण्ड, गीताप्रेस, गोरखपुर, वि.सं. 2065, पृ. 28*
15. *गीताप्रेस – महाभारत के कुछ आदर्श पात्र, गीताप्रेस, गोरखपुर, वि.सं. 2070, पृ. 101*
16. *http://www.indianminiaturepaintings.co.uk/jaipur_avatara_vyasa_0 003 82.html*
17. *http://www.mfa.org/collections/object/ganesa-writing-the-mahabharat-dictated-by-vyasa-149627*
18. *उपरोक्त चित्र राजकीय संग्रहालय, उदयपुर में संग्रहीत है।*
19. *उपरोक्त चित्र राजकीय संग्रहालय, उदयपुर में संग्रहीत (Acc.No. 6808) है।*